प्रवेशांक
शोधामृत
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित अर्धवार्षिक मूल्यांकित शोध पत्रिका

अतुलनीय आत्मा-अशोक महान् [273-236 ईसा पूर्व]

Online ISSN-3048-9296
Vol.-1; issue-1 (Jan-Jun) 2024
Page No.-53-56
©2024 Shodhaamrit (Online)
www.shodhamrit.gyanvividha.com

डॉ. प्रदीप कुमार सिंह
प्राचार्य,
राजन पीजी कॉलेज हिकमा,
कोपागंज, मऊ

Corresponding Author :
डॉ. प्रदीप कुमार सिंह
प्राचार्य,
राजन पीजी कॉलेज हिकमा,
कोपागंज, मऊ

चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र और बिन्दुसार का पुत्र अशोक न केवल भारतीय इतिहास का अपितु विश्व इतिहास के महानतम सम्राटों में से एक है। वह एक महान दादा का महानतम पोता और महान पिता का एक आदर्श पुत्र था। एक महान विजेता, कुशल प्रशासक, सफल धार्मिक नेतृत्व कर्ता तथा प्रजापालक राजा था। हेमचंद्र राय चौधरी ने कहा है कि- 'उसमें चन्द्रगुप्त मौर्य जैसी शक्ति, समुद्रगुप्त जैसी बहुमुखी प्रतिभा तथा अकबर जैसी सहिष्णुता थी। (He had the energy of a Chandragupta, the versatility of a Samudragupta and the catholicity of a Akbar.)'[1]
चार्ल्स इलियट ने कहा है- "पवित्र सम्राटों की दीर्घा में वह अकेला ही खड़ा है, शायद एक ऐसे व्यक्ति के समान जिसका अनुराग संतुलित, दयावान एवं सुखद जीवन के लिए था। वह न तो महान् रहस्यों का आकांक्षी था, ना ही अपनी आत्मा में लवलीन था। अपितु मानव तथा पशु का एक हितैषी मात्र था।"[2] नि:संदेह उसका शासन काल भारतीय इतिहास के उज्ज्वलतम पृष्ठ का प्रतिनिधित्व करता है।

विश्व इतिहास में मात्र तीन शासक ऐसे हुए जिनके नाम के साथ महान् शब्द जुड़ा हुआ है- अलक्जेण्डर द ग्रेट-सिकंदर महान, अशोका द ग्रेट-अशोक महान् और अकबर द ग्रेट-अकबर महान। इनके नाम के साथ "महान्" शब्द जोड़कर इन्हें संबोधित किया जाता है, लेकिन इन तीनों महान शासकों में देवनांप्रिय अशोक के साथ जुड़ा महान् शब्द सबसे उपयुक्त एवं सार्थक है क्योंकि वह एक मात्र जनता का शासक था जिसने अपनी जनता के लौकिक जीवन के साथ-साथ उनके पारलौकिक जीवन को भी संवारने और सजाने का पूरा प्रयास किया। उसने अपने कर्मों में सिद्धांत से ज्यादा व्यावहारिकता को शामिल किया। अशोक युद्ध का महान विजेता होने के साथ-साथ लोगों के ह्रदय का भी महान विजेता था। अशोक की गणना संसार के महानतम शासकों में की जाती है। इसका मूल कारण यह है कि उसने अपने उच्च आदर्शों एवं आध्यात्मिक चिंतन तथा त्याग के द्वारा भारतीय राजनीति में अपना एक पृथक स्थान स्थापित किया तथा एक विशाल साम्राज्य में एक संगठित शासन प्रबंध की स्थापना करके जनता की उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर दिया। लोक प्रसिद्ध इतिहासकार एच० जी० वेल्स ने उसकी तुलना अनेक राजाओं तथा संतों से करते हुए लिखा है कि "इतिहास के स्तंभों को भरने वाले राजाओं, धर्म अधिकारियों, संतो, महात्माओं आदि के मध्य अशोक का नाम आज भी 2000 वर्षों के उपरांत ठीक उसी प्रकार

उज्जवल है जितना कि उस युग में था और आशा है कि भविष्य में भी आकाश में प्रायः एकाकी नक्षत्र की भांति ही देदीप्यमान रहेगा।"[3] डॉ० राधा कुमुद मुकर्जी ने कहा है, "प्रत्येक युग व प्रत्येक देश में अशोक जैसा सम्राट पैदा नहीं होता। अशोक आज भी संसार के इतिहास में अपनी समता नहीं रखता है।"[4]

अशोक महान् भारतीय इतिहास का ही नहीं, वरन् विश्व इतिहास के महानतम् शासकों में एक है। एक प्रजावत्सल शासक, महान् विजेता एवं साम्राज्य-निर्माता, धर्म-परायण एवं धर्म-सहिष्णु, दयालु, उदार, लोकहित-चिंतक एवं मानवता के अनन्य पोषक के रूप में सुप्रसिद्ध अशोक अपने उन्नत धार्मिक विचार, उच्चादर्श, आध्यात्मिक चिंतन, त्याग, सुव्यवस्थित प्रशासन, प्रजा की इहलौकिक और पारलौकि सुख की हार्दिक कामना तथा संपूर्ण विश्व के प्राणियों के हित-साधन की विराट् चेष्टा के कारण भारत ही नहीं, वरन् विश्व के महान् सम्राटों में अद्वितीय है। नाम्ना 'देवानांप्रिय', किंतु व्यवहारतः 'प्रजानांप्रिय' अशोक का चाहे जिस दृष्टि से मूल्यांकन किया जाये, वह सर्वथा योग्य सिद्ध होता है। उसकी महानता, उसके साम्राज्य की विशालता और उसकी सेना की अजेयता, साम्राज्य की धन-संपन्नता तथा विपुल वैभव पर अवलम्बित नहीं है, प्रत्युत् उसका स्वच्छ और निर्मल चरित्र, उसके महान् नैतिक आदर्श, उसकी अटल धर्मनिष्ठा, उसकी कर्त्तव्य-परायणता तथा उसकी महान् उदारता उसकी अमिट कीर्ति के प्रकाशमान आधार हैं। उसमें चंद्रगुप्त मौर्य जैसी शक्ति, समुद्रगुप्त जैसी बहुमुखी प्रतिभा तथा अकबर जैसी सहिष्णुता थी। भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक को महानतम सम्राटों में से एक माना जाता है। इसने अपने साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया और इसकी ख्याति को चरम सीमा पर पहुँचाया। अपनी प्रजा को खुशहाल बनाने की पूरी कोशिश की। बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को अपनाकर विश्व को शांति, अहिंसा और प्रेम का पाठ पढ़ाया और विश्व में भारत की एक शानदार छवि को स्थापित किया।

अशोक महान् के शासनकाल में भारतवर्ष ने अभूतपूर्व राजनीतिक एकता एवं स्थायित्व का साक्षात्कार किया। उसने तक्षशिला के विद्रोहों का दमन कर और कलिंग जैसे राज्य को विजित कर अपनी सैनिक-निपुणता का परिचय दिया। आदर्श प्रजापालक सम्राट के रूप में उसने प्रशासन के क्षेत्र में सुधार कर पितृपरक राजत्व की अवधारणा को साकार किया। अपने छठें शिलालेख में वह अपनी राजत्त्व-संबंधी विचारों को व्यक्त करते हुए कहता है, 'सर्वलोकहित मेरा कर्त्तव्य है। सर्वलोकहित से बढ़कर कोई दूसरा कर्म नहीं है। मैं जो कुछ पराक्रम करता हूँ, वह इसलिए कि भूतों के ऋण से मुक्त हो जाऊँ।'[5] अशोक महान् ने संपूर्ण साम्राज्य में एक भाषा, एक लिपि, तथा एक ही प्रकार के नियम-कानून लागूकर राष्ट्रीय समस्या का कुशलतापूर्वक समाधान किया। न्याय प्रशासन के क्षेत्र में 'दंड-समता और व्यवहार-समता' की स्थापना निश्चित ही अशोक का क्रांतिकारी कार्य था।

अशोक महान् की ख्याति महान् विजेता के रूप में उतनी नहीं है, जितनी धर्मविजेता के रूप में। उसने कलिंग युद्ध के बाद युद्ध करने का विचार त्याग दिया और भेरीघोष के स्थान पर 'धर्मघोष' का जयनाद कर धर्म के क्षेत्र में विजय-ध्वज फहराने का संकल्प लिया। 'धर्मविजय' कोई सरल कार्य नहीं था, क्योंकि यह विजय बाहुबल की नहीं, आत्मबल तथा प्रेमबल की थी। यह विजय राज्य अथवा भूखंड पर नहीं, प्राणिमात्र के मस्तिष्क और भावना पर करनी थी। यह अशांति की नहीं, शांति की विजय थी। सत्य, सत्कर्म, सद्भावना एवं सद्व्यवहार की उसकी धर्मविजयी चतुरंगिणी सेना ने विभिन्न दिशाओं में जाकर भारतीयों को ही नहीं, विदेशियों को भी नतमस्तक कर दिया। उसने धम्म-महामात्रों, राजुकों, प्रादेशिकों आदि की नियुक्ति कर धर्म का ध्वज अनेक देशों में भेजा और धम्म-विजय की। यह आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विजय स्थायी सिद्ध हुई। ऐसे महान् आदर्शवादी सम्राट विश्व इतिहास के पन्नों में विरले ही मिलते हैं।

कुछ विद्वानों ने अशोक की धार्मिक तथा शांतिवादी नीति की यह कहकर आलोचना की है कि उसने मगध साम्राज्य की सैनिक शक्ति को कुण्ठित कर दिया जिससे अंततः उसका पतन हो गया। किंतु इसका कोई प्रमाण नहीं है कि अशोक की धार्मिकता एवं शांतिवादिता की नीति से मगध की सामरिक कुशलता का किसी भी प्रकार से ह्रास हुआ। उसने शांतिवादी नीति का इसलिए अनुसरण किया कि उसके संपूर्ण साम्राज्य में पूर्णरूपेण शांति और समरसता का वातावरण व्याप्त था तथा उसकी बाह्य सीमाएँ भी पूर्णतया सुरक्षित थीं। सीमांत एवं जंगली जातियों को वह जिस प्रकार कड़े शब्दों में चेतावनी देता है, उससे स्वतः सिद्ध हो जाता है कि साम्राज्य में किसी भी प्रकार की सैनिक शिथिलता नहीं आई थी। विश्व में अनेक विजेता शासक हुए हैं जिनकी

कृतियों से इतिहास के पन्ने भरे पड़ें हैं। इनमें सिकंदर, सीजर, नेपोलियन आदि के नाम अग्रगण्य हैं। यह सही है कि ये तीनों योद्धा एवं प्रशासक के रूप में अशोक से बढ़कर थे, किंतु किसी सम्राट की महानता का मानदंड मात्रा युद्ध तथा साम्राज्य-विस्तार नहीं होते हैं, वह मानवता के प्रति अपने दृष्टिकोण तथा उसके लिए किये गये अपने कार्यों के कारण महान् बनता है। ये तीनों विजेता क्रूर, निर्दयी एवं रक्त-पिपासु थे। उनके द्वारा स्थापित साम्राज्य उनके साथ ही छिन्न-भिन्न हो गया तथा मानवजाति के लिए इन विश्व विजेताओं की कोई स्थायी देन नहीं है।

इतिहासकार एच.जी. वेल्स सिकंदर के संबंध में लिखते हैं, "ज्यों-ज्यों उसकी शक्ति बढ़ी, त्यों-त्यों उसकी मदान्धता और प्रचण्डता भी बढ़ती गई। वह खूब शराब पीता था तथा निर्दयतापूर्वक हत्याएँ करता था.....तैंतीस वर्ष की आयु में ही वह चल बसा। लगभग तुरन्त ही उसका साम्राज्य टुकड़े-टुकड़े होने लगा। इसी प्रकार सीजर अत्यंत लम्पट तथा उच्श्रृंखल व्यक्ति था। जिस समय वह अपनी शक्ति की पराकाष्ठा पर था और विश्व का भला कर सकता था, उस समय लगभग एक वर्ष तक मिस्र में क्लियोपेट्रा के साथ रंगरेलिया मनाता रहा, यद्यपि उसकी आयु चौवन वर्ष की थी। इससे वह निम्नकोटि का विषयासक्त दिखाई देता है, न कि श्रेष्ठ शासक। जहाँ तक नेपोलियन का सवाल है, उसके विषय में भी वेल्स सही सोचते हैं कि यदि उसमें तनिक भी दृष्टि की गंभीरता, सृजनात्मक कल्पना-शक्ति तथा निःस्वार्थ आकांक्षा रही होती, तो उसने मानव जाति के लिए ऐसा काम किया होता जो इतिहास में उसे सूर्य बना देता। उसने अपने देश का चाहे जितना भी भला किया हो, मानव-कल्याण के प्रति उसके द्वारा किये गये कार्य प्रायः शून्य हैं। अशोक के व्यक्तित्व में इन विजेता शासकों के कोई भी दुर्गुण नहीं मिलते। यह असोक ही है जिसके लोकोपकारी कृतियों एवं उदात्त आदर्शों के प्रति आज भी विश्व में सम्मान है। निःसंदेह, अशोक ही है जो अपनी प्रजा के भौतिक एवं आत्मिक कल्याणार्थ किये गये लोकहितकारी कार्यों के कारण विश्वव्यापी एवं शाश्वत यश का अधिकारी है"[6]।

विभिन्न विद्वानों ने अशोक प्रियदर्शी की तुलना विश्व इतिहास की भिन्न-भिन्न विभूतियों, जैसे- कान्स्टेंटाइन, एंटोनिसस, अकबर, सेंट पाल, नेपोलियन, सीजर आदि के साथ की है, किंतु इनमें से कोई भी अशोक की बहुमुखी प्रतिभा की बराबरी में नही टिकता। रिज डेविड्स अशोक प्रियदर्शी की तुलना कान्स्टेंटाइन से करते हैं। अशोक तथा रोमन सम्राट कान्स्टेंटाइन में मात्र यही समानता है कि असोक ने जिस प्रकार बौद्ध धर्म को ग्रहण कर उसका प्रचार-प्रसार किया, उसी प्रकार कान्स्टेंटाइन ने भी ईसाई धर्म को ग्रहण कर उसका प्रचार-प्रसार करवाया था। किंतु उसके उदय के पूर्व ही ईसाई धर्म रोम में काफी लोकप्रिय हो चुका था और उसे अपनाना कान्स्टेंटाइन की विवशता बन गई थी। उसने राजनैतिक कारणों से उत्प्रेरित होकर इस धर्म को संरक्षण एवं प्रोत्साहन दिया था, जबकि अशोक के धर्म के पीछे कोई राजनैतिक चाल नहीं थी।अशोक की सहिष्णुता सच्चे हृदय की प्रेरणा थी। कान्स्टेंटाइन अपने जीवन के अंतिम दिनों में प्रतिक्रियावादी होकर पेगनवाद की ओर उन्मुख हुआ और उसका धर्म एक अजीब खिचड़ी हो गया। इसके विपरीत अशोक महान् में कोई ऐसी गिरावट नहीं दिखाई देती। इसी प्रकार मैकफेल अशोक की तुलना एक अन्य रोमन सम्राट मार्कस ओरेलियस एंटोनियस के साथ करते हैं। इसमें संदेह नहीं कि एंटोनियस एक महान् दार्शनिक था, किंतु जैसा कि भंडारकर लिखते हैं कि आदर्श की उदात्तता और अविभ्रांत तथा सम्यग्योजित उत्साह की दृष्टि से अशोक रोमन सम्राट से कहीं ऊपर था। वह ईसाई धर्म के प्रचार को रोमन समृद्धि के लिए घातक समझता था और इस कारण उसने ईसाइयों पर व्यवस्थित ढंग से अत्याचार भी किया। दूसरी ओर असोक में धार्मिक कट्टरता अथवा असहिष्णुता का नितांत अभाव था। ऐसी स्थिति में अशोक का स्थान एंटोनियस से कहीं ऊँचा है। अनेक इतिहासकार अशोक की तुलना मुगल सम्राट अकबर से करना करते हैं। निःसंदेह अकबर में सहिष्णुता थी तथा वह भी सच्चे हृदय से अपनी प्रजा का कल्याण करना चाहता था। विभिन्न धर्मों तथा संप्रदायों की अच्छी-अच्छी बातों को ग्रहण कर उसने सामान्य जनता के कल्याण के लिए दीने-इलाही नामक नया धर्म भी चलाया। किंतु जैसा कि भंडारकर ने स्पष्ट किया है कि अकबर सबसे पहले एक राजनैतिक तथा सांसारिक व्यक्ति था। धार्मिक सत्य के लिए वह अपनी बादशाहत को संकट में डालने के लिए तैयार नहीं था। उसने मुस्लिम प्रजा के विरोध से बचने के लिए धार्मिक वाद-विवाद को बंद करवा दिया। पुनः वह सबके प्रति सहिष्णु भी नहीं था। अकबर में अशोक जैसा धार्मिक उत्साह भी नहीं था। इसी कारण उसका धर्म राजदरबार के बाहर नहीं जा सका तथा उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया। दूसरी ओर अशोक में कहीं

भी असहिष्णुता नहीं दिखाई देती। उसका धर्म विश्वधर्म बन गया। नीलकंठ शास्त्री लिखते हैं कि –"अशोक को अकबर की अपेक्षा मानव प्रकृति का बेहतर ज्ञान था। इस प्रकार अशोक अकबर की अपेक्षा कहीं ज्यादा महान् था। मैकफेल ने अशोक के संदर्भ में सेंट पाल का नाम लिया है। जिस प्रकार बौद्ध धर्म के इतिहास में असोक महान् व्यक्ति है, उसी प्रकार ईसाई धर्म के इतिहास में सेंट पाल महान् हैं। दोनों ने अपने-अपने धर्मों को जन-सामान्य के लिए कल्याणकारी बना दिया। किंतु इसके अलावा दोनों में कोई समानता नहीं है"[7]।

इसी प्रकार अशोक की तुलना एल्फ्रेड, शार्लमेन, उमर खलीफा आदि शासकों से की जाती है, किंतु इनमें से कोई भी असोक जैसी बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न नहीं था। इतिहासकार एच.जी. वेल्स असोक के व्यक्तित्व एवं चरित्र का मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं- 'इतिहास के स्तंभों को भरनेवाले राजाओं, सम्राटों, धर्माधिकारियों, संतों, महात्माओं आदि के मध्य असोक का नाम प्रकाशमान् है और वह आकाश में प्रायः एकाकी नक्षत्र की भाँति देदीप्यमान् है।'[8] वोल्गा से जापान तक आज भी उसके नाम का सम्मान किया जाता है। इसी प्रकार चार्ल्स इलियट ने लिखा है कि – "पवित्र सम्राटों की दीर्घा में वह अकेला ही खड़ा है, शायद एक ऐसे व्यक्ति के समान, जिसका अनुराग, दयावान एवं सुखद जीवन के लिए था। वह न तो महान् आकांक्षाओं का था, न ही अपनी आत्मा में लवलीन था, वह मानव तथा पशु का एक हितैषी मात्र था"[9]। आर.सी. दत्त अशोक को भारत का महानतम् सम्राट बताते हुए लिखते हैं कि भारत के किसी सम्राट ने, यहाँ तक की 'विक्रमादित्य' ने भी इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं की तथा किसी ने भी धार्मिकता तथा सदाचार के प्रति अपने उत्साह के कारण विश्व-इतिहास पर इतना अधिक प्रभाव उत्पन्न नहीं किया, जितना कि मौर्य सम्राट अशोक ने"[10]।

इस प्रकार विश्व इतिहास में अशोक का स्थान सर्वथा अद्धितीय है। सही अर्थों में वह प्रथम राष्ट्रीय शासक था जिसने भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मानवतावादी राष्ट्र के रूप में पहचान दिलाई। आज जब विश्व के देश हथियारों की होड़ रोकने तथा युद्ध की विभीषिका को टालने के लिए सतत् प्रत्यनशील होकर भी सफल नही हो पा रहे हैं और मानवता के लिए परमाणु युद्ध का गंभीर संकट बना हुआ है, तब अशोक के कार्यों की महत्ता और उनकी प्रासंगिकता स्वयमेव स्पष्ट हो जाती है। अशोक के उदात्त आदर्श विश्व-शांति की स्थापना के लिए आज भी मार्गदर्शन करते हैं। स्वतंत्र भारत की सरकार ने सारनाथ-स्तंभ के सिंह-शीर्ष को राजकीय चिन्ह के रूप में स्वीकार कर इस महान् शासक के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है। अशोक महान् ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और साहित्य में उल्लिखित विश्वबन्धुत्व, लोक कल्याण और जिओ और जीने दो (Live and. Let others live) की भावना को विश्व पटल पर स्थापित किया। नि:संदेह वह शांति, सौहार्द एवं सहिष्णुता का पुजारी था। उसकी पवित्र भावना उसकी आत्मा को अतुलनीय बनाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. प्राचीन भारत का इतिहास- रमाशंकर त्रिपाठी
2. एज आफ द नन्दाज एण्ड मौर्याज- नीलकंठ शास्त्री
3. प्राचीन भारत- राजबली पांडेय
4. बुद्धिस्ट इंडिया- रिजडेविडस
5. पो.हि. आफ ऐन्शेन्ट इंडिया- हेमचंद्र रायचौधरी
6. एज आफ इम्पीरियल यूनिटी- राधाकुमुद मुकर्जी
7. बौद्ध युग में सभ्यता- आर.सी.दत्त
8. आउटलाइंस आफ हिस्ट्री- एच.जी.वेल्स
9. हिंदुज्म और बुद्धिज़्म- चार्ल्स इलियट
10. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति- कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव